om-10_Page 1 and 2 18-08-2014 10:03 Page 3

रोशनी फैलाता एक प्रकाशपुंज

''एक प्रकाश पुंज है, एक प्रकाश की मणि।
दोनों मिल के आज भी दे रहे हैं रोशनी।।''

समाज की सेवा में दरअसल स्वयं का ही तो विस्तार है। अध्यात्म में स्वयं की सेवा का अर्थ स्वयं के स्वरूप से अच्छी तरह परिचित होकर अपने विकर्मों से मुक्ति पाना है। यही कार्य दादी प्रकाशमणि जी का था, जो कहा करती थी कि आप स्व-सेवा करो तो अपने आप ही विश्व सेवा हो जायेगी। उदाहराणार्थ उनसे एक बार पूछा गया कि दादी जी आप खुद की उन्नति के लिए कौन सा पुरुषार्थ करती हैं, दादी जी कहते कि मैं खुद का खुद से साक्षात्कार करती हूं अर्थात् आत्मा रूपी मणि को मैं अपनी हथेली पर रखती हूं तथा देखती हूं कि उसके किस छोर पर दाग है, अर्थात् किससे रोशनी ठीक से बाहर नहीं जा रही है उस पर मैं कार्य करती थी। मैं पूरे विश्व को अपना मानती हूं तथा उसके लिए अपने किसी भी भाई-बहन के लिए मेरे अन्दर कोई ऐसे भाव नहीं हैं ना जिससे उसे ये लगने लगे कि शायद दादी जी मेरे लिए ऐसा नहीं सोंचती हैं जैसा सभी के लिए। इसलिए ही शायद उनकी झिड़की, उलाहना, आदेश व अनुदेश में लोगों को मिठास का अनुभव होता रहा। ऐसे हज़ारों ब्राह्मण वत्स हैं जिनके अनुभव में यह बात है कि दादी जी सदा उन्हें मीठी पालना देती रहीं। दादी जी हमेशा ही सबकी संभाल अपने ज्ञान-योग द्वारा करती थी।

- ब्र.कु. गंगाधर

शायद इन्हीं सारी बातों को लेकर प्रकाश पुंज शिव बाबा ने अपने रथ द्वारा यही प्रेरणा दी कि आप परमात्म कार्य की उन सभी जिम्मेवारियों को निभाओ जो बाबा उनके रथ द्वारा किया करते थे। ज्ञान में विशेष रुचि रखने वाली दादी जी ने इस विशेषता को समाज के सभी वर्गों के लिए अपनाया। सभी वर्ग के श्री मुख से यही बात प्रस्फुटित होती रही कि जैसे दुनिया में अन्य धर्म-अध्यात्म हैं वैसे यह स्वयं-केन्द्रित नहीं है, यह एक विश्वव्यापी अभियान है, जिसे हमें भी करना चाहिए, चलिए अगर कर नहीं सकते तो सहयोग तो दे ही सकते हैं। शांति, अहिंसा, सदभाव तथा सहयोग की प्रतिनिधि संस्था के रूप में मान्यता भी दादी जी के मणि के द्वारा ही हो पाया। सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने आकर एक मंच पर समाज के संस्कार व संसार परिवर्तन की बातें भी रखीं तथा यह भी कहा कि आप हमें कोई सेवा बताएं तो हमें बड़ा ही सौभाग्य का अनुभव होगा।

चलो मैं यह नहीं कहता कि दादी जी ने एक ही दिन में अपने अंदर वह सारी विशेषताएं ला दी, परंतु मैं ये कहता हूं कि उन सभी गुणों पर बार-बार चिन्तन-मंथन करती थीं दादी जी।

इसलिए ही शायद लौकिक दृष्टि में प्रबंधन, पालना और विस्तार के कार्य के लिए ब्रह्मा बाबा ने दादी प्रकाशमणि को ही चुना। उस प्रकाश की हल्की व प्यारी सी आंच में सभी अपने मन की चोटों को सेकने की कोशिश करते रहते हैं। सभी जैसे ही उस प्रकाश स्तंभ के आसपास खड़े होते हैं तो सभी के मन में दादी जी के प्रति कोई न कोई भाव उत्पन्न अवश्य होते हैं। सभी उस विश्व ग्लोब का चित्र देखते तथा उस पर मणि का प्रकाश फैलता हुआ अनुभव करते हैं। उस प्रकाश की आभा ऐसे बहुत से भक्तों के हृदयों को स्पंदित करती, झंकृत करती और वो भी कहते कि क्या बात है, क्या थी आपकी दादी जी। उनमें एक तरह से अपनापन ही तो है, जो सभी लोग अपनी मत रखते रहते हैं।

जैसे शिव-परमात्मा की मंशा से ज्ञान-कलष माताओं के सिर पर रखा गया, उसी में से ही जगत-माता के रूप में दादी जी थी जिन्होंने अपने प्रकाश से सभी के मन रूपी क्यारी को सींचा। विस्तारित रूप से अगर हमें कहना है तो बहुत कुछ कहा जा सकता है लेकिन देदीप्यमान प्रकाश को लिया जाये जिससे आज जग प्रकाशित होता है, उसने अपने में से थोड़ी रोशनी निकाल कर एक मणि को प्रदान किया। उस मणि ने अपने प्रकाश से अन्य मणियों को थोड़ी-थोड़ी रोशनी देनी शुरु की। आज सभी मणियां प्रकाशित हैं उस प्रकाश से जो आज न होते हुए भी हर जगह मौजूद हैं। उसकी आहट सभी के पास पहुँचती है, सभी उसे देखते भी हैं, परंतु उसके अनुभव को अपना अनुभव बनाना सभी के बस की बात नहीं। निमित्त व निर्माण भाव की अनुपम देवी के रूप में उन्होंने अपना जीवन सभी के सामने अनुकरणीय रूप में रखा।

कहा भी जाता है कि इस संसार में कार्य तो सभी करते हैं, लेकिन कुछ लोग सभी के लिए एक मिसाल छोड़ जाते हैं, आप उसे देखें तो उदाहरण स्वरूप ही देखें। मगर क्या कहें उनके बारे में जिसे सारी दुनिया ही नतमस्तक होकर चरण वंदन करती, उनके मुख कमल से निकली बातों को धारण भी करते एवं धारणा कराने को आतुर भी रहते।

जहाँ पहुँची आवाज़ वहाँ हुआ सेवा का आगाज़

दादी प्रकाशमणि को मैं पचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता संपन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुँज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बनाए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैम्पल बनकर रहीं।

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी, उनका जहाँ-जहाँ कदम पड़ा, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा

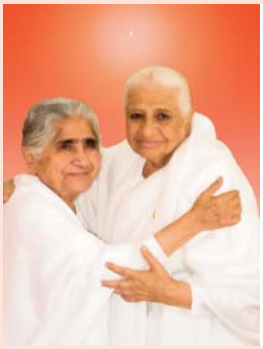

गया। दादी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ-परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यर पाने में प्रेरणाएँ भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। सन् 1977 में दादी हमारे पास आईं। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे ये भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों मं आ गये हो। दादी की नैचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था।

यह मेरा महान भाग्य है कि ऐसी महान् दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परन्तु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मधुबन मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए दादी स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के नये बीच अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई। देखते ही देखते आज हमारे सामने गलोब पर बाबा का परचम लहराया।

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

साकार बाबा का स्नेही 'आकार' लिया दादीने

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूँद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूँदें पड़ रही हैं, एक-एक बूँद ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही हैं। अत: हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षायें भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई गलती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर गलती नहीं सुनाते थे। मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे-ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। गलती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चैम्बर के नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट-से जाते थे और हम सभी बच्चे आस-पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चैम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि, वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक गलती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, गलती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

दादी जी दिल में किसी की, कोई बात नहीं रखती थीं

ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत इस प्रकार, सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए।